वर्ष ५, अंक - ११, अप्रैल २०२५

आओ बातें करें

मानव भारती स्कूल देहरादून की पहल

पृथ्वी दिवस

पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल को मनाया जाता है ।यह दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि हम अपनी पृथ्वी पर ध्यान दे पाए और उसके प्रति जागरूक करने उसके संरक्षण के लिए प्रेरित हो पाए। पृथ्वी हमारा घर है। हमको हवा, पानी, भोजन और रहने के लिए स्थान भी प्रदान करती है। लेकिन कुछ कारण से पृथ्वी को बहुत नुकसान हो रहा है प्रदूषण पेड़ों की कटाई और जलवायु में बदलाव के कारण पृथ्वी बीमार हो रही है।

पृथ्वी की सेहत खराब होने से हमें बाढ़ सूखा और तूफान जैसी बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए हमें पेड़ों की सुरक्षा के लिए काम करना होगा। हमें अपने दैनिक जीवन में कुछ बदलाव करने होंगे जैसे कि बिजली की बचत करना पानी की बचत करना पेड़- पौधे लगाना इन बदलाव से हम पृथ्वी को सुरक्षित और स्वच्छ रख सकते हैं ।हमें अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ और सुंदर बनाने की कोशिश करनी चाहिए और प्रदूषण को कम करना होगा हमें अपने समुदाय में लोगों को यह बताना होगा कि पृथ्वी की सुरक्षा क्यों जरूरी है हमें उन्हें समझना होगा कि पृथ्वी की सुरक्षा से हमारी अपनी सुरक्षा जुड़ी हुई है पृथ्वी में जनसंख्या बढ़ती जा रही है और गंदगी उतनी ही फैलती जा रही है। इसलिए हमें बच्चों को यह बताना होगा की सफाई बहुत महत्वपूर्ण चीज है। ताकि उनका भविष्य अच्छा रहे हमें पृथ्वी का सम्मान करना चाहिए और उसको स्वच्छ हरा भरा और सुंदर बनाना होगा। हम सभी मिलकर पृथ्वी के संरक्षण के लिए काम करें और अपनी पृथ्वी को एक बेहतर भविष्य प्रदान करें। पेड़ लगाएंगे पृथ्वी को स्वच्छ बनाएंगे।

- तानिया पासवान, 10 ब

पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ

धरती मां की पुकार सुनो बच्चों ध्यान से।
पेड़ लगाओ पर्यावरण बचाओ इस आहवान से।
हरी भरी धरती नीला आसमान
पेड़ों से ही बनता जीवन का सम्मान।
धूप की गर्मी छाया का सुख
पेड़ों से ही मिलता ठंडी हवा का रुख।
फूलों की खुशबू फलों का स्वाद
पेड़ों से ही होता है जीवन आबाद।
चिड़ियों का बसेरा जानवरों का घर।
पेड़ों से ही बनता प्रकृति का सुंदर मंजर ।
नदियां बहती झरने झर-झर
पेड़ों से ही होता जल का संचय अपार।
मिट्टी का कटाव बाढ़ का प्रकोप।
पेड़ों से ही रुकेगा यह भीषण विलाप।
ऑक्सीजन की कमी प्रदूषण का जाल।
पेड़ों से ही होगा इसका समाधान तत्काल ।
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ ।
पर्यावरण को अपने स्वच्छ बनाओ।
आने वाली पीढ़ी देगी धन्यवाद तुम्हें।
पेड़ों से भरा सुंदर जग छोड़ जाओगे हमें।

- अदिति बहुगुणा, 12 पीसीबी

पृथ्वी दिवस: हमारे ग्रह के प्रति जागरूकता और संरक्षण का दिन

पृथ्वी दिवस (EARTH DAY) हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाता है। यह दिन पृथ्वी के पर्यावरणीय संरक्षण और स्थिरता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से समर्पित है। पृथ्वी दिवस की शुरुआत 1970 में अमेरिका से हुई थी, जब अमेरिकी पर्यावरणविद् गेलॉर्ड नेल्सन ने इसे शुरू किया था। इस दिन का उद्देश्य लोगों को हमारे ग्रह के पर्यावरणीय संकटों, जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और वनस्पति और वन्यजीवों की प्रजातियों के विलुप्त होने के खतरे के बारे में जागरूक करना है। पृथ्वी दिवस के महत्व को देखते हुए, विभिन्न देशों में इस दिन को बड़े स्तर पर मनाया जाता है। इस दिन को मनाने के लिए सरकारें, गैर-सरकारी संगठन (NGO), और आम नागरिक विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करते हैं। इनमें वृक्षारोपण, जल संरक्षण, ऊर्जा बचत और प्रदूषण नियंत्रण जैसे कार्य शामिल होते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम, रैलियाँ, और वर्कशॉप्स का आयोजन किया जाता है, ताकि लोग पर्यावरण की रक्षा के लिए जिम्मेदारी महसूस करें। पृथ्वी दिवस हमें यह संदेश देता है कि हमारे पर्यावरण का संरक्षण हमारे हाथों में है। यदि हम प्रकृति का ध्यान नहीं रखेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ इसे अनुभव नहीं कर पाएंगी। इसलिए यह आवश्यक है कि हम सभी मिलकर पृथ्वी के संसाधनों का उचित उपयोग करें और उसे बचाने के प्रयास करें।

इस दिन का उद्देश्य केवल पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा करना नहीं, बल्कि लोगों को हर स्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरूक करना और उन्हें पृथ्वी के संरक्षण के लिए सक्रिय कदम उठाने के लिए प्रेरित करना है।

- कृष्णा मंदीप, 11

यदि धूप न होती तो...

यदि धूप न होती तो दुनिया में कोई पेड़ पौधे ना होते पेड़ पौधे धूप और पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते यदी यह धूप होती ही नहीं तो हमें उस चीज की आदत हो जाती है और हम बिना धूप के रह लेते लेकिन हमें कुछ चीजों से गुजरना पड़ता है जैसे विटामिन डी की कमी पौष्टिक सब्जियों की कमी क्योंकि सब्जियों पर धूप ही नहीं पड़ेगी तो उन पर पौष्टिकता कैसे आएगी धूप न होने के कारण पृथ्वी में हमेशा अंधेरा रहेगा। जिस कारण धरती के जीव जंतुओं को अधिक ठंड को झेलना पड़ेगा धूप से ही रोशनी ना होने के कारण लोगों को बिजली के भरोसे रहना पड़ेगा और जो सोलर पैनल लगा कर देते हैं उनको भी अब बिजली के भरोसे रहना पड़ेगा और उससे लोगों का खर्चा बढ़ जाएगा जिससे गरीब लोगों को अधिक तकलीफ होगी रोशनी में धूप न होने के कारण अनाज भी नहीं खा पाएंगे हम।

- ईवन्या कश्यप, 10 अ

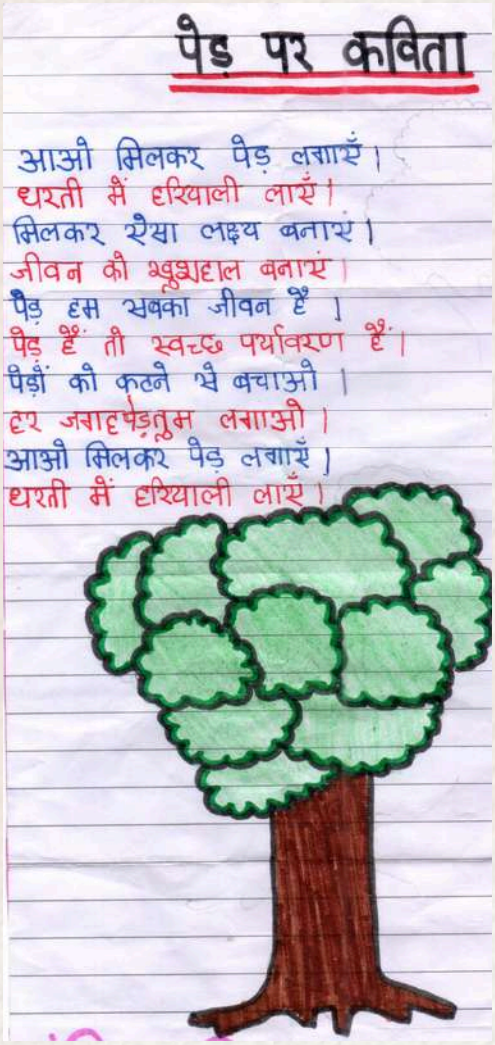

- अंशिका मिश्रा, 9 अ

रामनवमी

रामनवमी हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। जो भगवान राम के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह त्यौहार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाया जाता है। जो मार्च या अप्रैल के महीने में पड़ता है। भगवान राम को हिंदू धर्म में एक आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में माना जाता है। उनका जन्म अयोध्या में राजा दशरथ और रानी कौशल्या के घर हुआ था। भगवान राम का जीवन और उनकी कहानी ने हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इस दिन लोग भगवान राम की पूजा करते हैं और उनकी कहानी को सुनते हैं भगवान राम के जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को याद करते हैं। जैसे कि उनकी माता कौशल्या के प्रति आज्ञाकारिता उनके भाई लक्ष्मण के साथ उनकी गहरी दोस्ती। पिता की आज्ञा का पालन। इस त्योहार से हमें कई महत्वपूर्ण सबक सीखने को मिलते हैं।

यह हमें बताता है की सच्चाई न्याय और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए और यह भी सीखना है कि हमें परिवार और समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहिए ।आजकल रामनवमी का त्योहार पूरे भारत में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। लोग भगवान राम की पूजा करते हैं ।रामलीला का आयोजन करते हैं और अपने परिवार और मित्रों के साथ मिलकर त्यौहार का आनंद लेते हैं।

- आर्या नंदिनी पांडे, १० अ

परशुराम जयंती

अक्षय तृतीया के दिन भगवान परशुराम का जन्म हुआ था। इसलिए इसी दिन परशुराम की जयंती मनाई जाती है। जिन्हें हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है। गुजरात, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा राज्यों में परशुराम की जयंती बड़े धूमधाम से मनाई जाती है।

परशुराम जी हिंदू धर्म के एक महान भगवान है। उन्हें भगवान विष्णु का छठा अवतार माना जाता है। उनका नाम राम और परशु से लिया गया है। क्योंकि उनके पास एक शक्तिशाली परशु (फरसा) था जिनके साथ उन्होंने असुरों का संहार किया।

परशुराम जी का जन्म ऋषि जमदग्नि और उनकी पत्नी रेणुका के घर हुआ था ।परशुराम जी का जीवन पूरी तरह से सत्य धर्म और कर्तव्य की रक्षा के लिए समर्पित था ।कक्षा 10 की हिंदी पाठ पुस्तक का एक पाठ 'राम लक्ष्मण परशुराम संवाद "में परशुराम जी के बीच एक महत्वपूर्ण संवाद है जब राम और लक्ष्मण ने परशुराम जी से मिलने के बाद उसे अपनी धनुष- बाण की शक्ति को लेकर प्रश्न किया तो परशुराम ने कहा कि वह स्वयं विष्णु के अवतार है।

उनका उद्देश्य दानवों और असुरों को नष्ट करना है। परशुराम जी का यह संवाद हमें यह सिखाता है कि किसी भी स्थिति में धर्म और सत्य की रक्षा के लिए हमें अपने अहंकार को दूर रखना चाहिए। परशुराम जी ने कई वर्षों तक कठोर तपस्या की और भगवान शिव से अपने पास परशु (फरसे) को प्राप्त किया। परशुराम शिव को अपना गुरु मानते थे। परशुराम क्षत्रियों को अपना शत्रु मानते थे। अपने फरसे के द्वारा उन्होंने सहस बाहु नामक राजा का वध किया और कई बार पृथ्वी को राजाओं से विहीन करके उनसे राज्य व सम्पति छीन कर ब्राह्मणों को दान कर दिया । उनके युद्धों ने दानवों को नष्ट किया ।परशुराम का यह परशु उनके साथ हमेशा रहता था। जिससे वे शक्तिशाली युद्ध लड़े और धर्म की रक्षा की । वे ब्राह्मणों के रक्षक के रूप में भी प्रसिद्ध हुए और उनके कार्यों से समाज में सत्य और धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ी। परशुराम योद्धा और तपस्वी के रूप में हमेशा याद किए जाते हैं।

परशुराम जी का जीवन हमें यह सिखाता है कि धर्म की रक्षा के लिए हमें कभी भी संघर्ष से पीछे नहीं हटना चाहिए ।उनका जीवन एक आदर्श उदाहरण है जो हमें अपने कर्तव्य और धर्म का पालन करने की प्रेरणा देता है। वह एक महान संत योद्धा और धर्म रक्षक के रूप में सदैव पूजित रहे हैं और रहेंगे।

– प्राची राय, 12 पीसीबी

बैसाखी

बैसाखी एक महत्वपूर्ण पर्व है। यह पर्व हर साल 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है। बैसाखी कृषि की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह फसल की कटाई का समय होता है।

किसान इस दिन अपनी मेहनत की सफलता और अच्छी फसल की खुशी मनाते हैं। बैसाखी के दिन खेतों में ख़ुशी का माहौल होता है और लोग अपने परिवार दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ उत्सव मनाते हैं। इस दिन पारंपरिक पंजाबी नृत्य भांगड़ा और गिद्दा भी बड़े उत्साह के साथ किए जाते हैं। जिससे वातावरण और भी उल्लासित हो उठता हैं।

बैसाखी का पर्व सिख धर्म के अनुयायियों के लिए माना जाता है ।इस दिन लोग नए कपड़े पहनते हैं। दोस्तों और परिवार के साथ खुशियां मनाते हैं । यह पर्व भारतीय संस्कृति में एकता ,भाईचारे में एकता और सौहार्द का प्रतीक है ।यह प्रत्येक वर्ष पूरे देश में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है।

- जैसवीन कौर, 10 ब

मित्र

सच्चाई से जो हमें मिलता है एक सच्चा मित्र।
प्यार से जो हमें संवारता है वह एक सच्चा मित्र।
बुरे समय में जो हमारा साथ देकर हमें हंसाता है वह एक सच्चा मित्र ।
एक मित्र के बिना है जीवन अधूरा। एक मित्र के बिना ना है जीवन पूरा।

- अवंतिका रावत, 10 ब

माँ

मां जन्म देती है वह हमें पाल-पोषकर बड़ा करती है ।
अपने हिस्से की चीजें हमको दे देती है।
हमारे लिए दिन-रात खाना पकाती है।
हमारी जरूरत का ख्याल रखती है। हमारी पल-पल की खबरें रखती है।
अपने आंचल से हमको ढक के रखती है ।
वह एक माँ ही तो है जो अपने बच्चों के लिए हर काम करती है।
उसके बच्चों की गलतियों पर उन्हें माफ कर देती है।
एक माँ ही है जो अपने बच्चों को इतना प्यार कर सकती है।

- कात्यायनी, 10 ब

मां

मां हमारे जीवन की सबसे अहम व्यक्ति होती है।
मैं अपने जीवन में सबसे ज्यादा प्यार मां से करता हूं।
भगवान हर जगह नहीं होता इसलिए उन्होंने माँ बनाया ।
मां हमारी सबसे अच्छी दोस्त होती है।
माँ से ज्यादा प्यार हमें इस जीवन में और कोई नहीं कर सकता।
अगर हमारे जीवन में माँ है तो सब वरना कुछ नहीं है इस जीवन में।

- ध्रुव, 10 ब

मां

मां तेरा आंचल ना छोड़ूँ मैं कभी।
मां तेरे अलावा कोई नहीं है मेरा ।
तेरे बिना मेरा होगा नहीं गुजारा ।
खुद भूखी रहकर हमें खिलाया तूने मां।
तूने पूरी जिंदगी संभाला मेरी माँ।
मैं तुझे कैसे धन्यवाद करूं माँ।
तू ना होती तो मैं भी यहां ना होती ।
मेरी प्यारी मां मेरी प्यारी माँ।

- तानिया पंत, 10 ब

मां

मेरी मां मुझे बहुत प्यार करती है।
मेरी मां मेरी परवाह करती हैं ।
मैं मेरी मां का लाडला हूं ।
मेरी मां मेरे लिए बहुत सारे पकवान बनाती है ।
मेरी मां मुझे बहुत सारी जगह
घूमाने ले जाती है।
मेरी मां को मैं एक दिन गर्व महसूस कराऊंगा।
मेरी मां को मुझ पर बहुत गर्व है।
जब मेरी तबीयत खराब होती है ।
तब मेरी मां मेरे लिए रात भर बैठकर
मेरी सेवा करती है।
मेरी मां बहुत अच्छी है मेरी मां बहुत प्यारी है।

- देव भंडारी, 10 ब

बचपन के कुछ यादगार पल बच्चों की कलम से

मेरे बचपन के दिन

मेरा बचपन काफी सादा बीता ।मैंने शहरी और गांव का जीवन दोनों जिया है। 6 साल की उम्र तक मैं सरकारी स्कूल में शिक्षा ली । मेरे शहर में पढ़ने का कारण सबसे बड़ी मेरी मां है उनके कारण ही मैं आज अच्छी शिक्षा प्राप्त कर पा रही हूं ।अभी शहर में तो मैं आ गई लेकिन मुझे क्या पता था कि शहर में इतनी मुश्किलें होंगी। हमेशा गांव की याद आती है।

हर साल एक महीने के लिए गर्मियों की छुट्टी में गांव जरूर जाती हूँ। जो कि साल के सबसे अच्छे और सुंदर पल होते हैं। बचपन से ही मुझे गांव से काफी ज्यादा लगाव रहा है।

हमेशा पहाड़ में जाने का मन करता है। शायद जो भी मेरा बचपन का सपना रहता था मैं उसे प्राप्त करने के लायक बन रही हूं।

अब पीछे अपने बचपन के दिनों की यादों को देखकर हंसने मुस्कुराकर आगे अपने जीवन की ओर बढ़ रही हूं।

मेरे जूते

कक्षा नवी का पाठ प्रेमचंद के फटे जूते को देखकर मन में काफी प्रश्न आते हैं। क्योंकि प्रेमचंद एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे। तस्वीर में उनके जूते फटे हुए थे। परंतु उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता इससे यह पता चलता है कि प्रेमचंद को दिखावा बिल्कुल पसंद नहीं था। इसलिए उन्हें फटे जूते से शर्म नहीं आई और अगर प्रेमचंद की जगह मैं होती या चाहे कोई और होता तो हमें भी बहुत शर्म महसूस होती। आजकल लोग दिखावे में ज्यादा विश्वास रखते हैं। सबको अच्छे से सजना और संवरना होता है। आजकल पैरों के जूते सर की टोपी से ज्यादा महंगे आ रहे हैं। परंतु सर की टोपी मान मर्यादा का प्रतीक होती है। हमें प्रेमचंद से सीखना चाहिए और दिखावे में नहीं बल्कि काबिलियत पर ध्यान देना चाहिए।

- आकांक्षा, 10 अ

मेरे बचपन के दिन

बचपन हमारी जिंदगी का सबसे खूबसूरत समय होता है। जो हम हमारी जिंदगी के सबसे अनमोल लोगों के साथ बिताते हैं। मेरा बचपन मेरे पूरे परिवार के साथ बहुत हंसी खुशी गुजरा वह खेल कूद मस्ती मेरी जिंदगी के अब तक सबसे यादगार लम्हें हैं। मम्मी-पापा के साथ खेलना जिद करना यह सब बचपन की बातें थी।

मैं बहुत भाग्यशाली थी कि मुझे इतना अच्छा परिवार मिला। नानी के यहां जाकर सभी भाई- बहनों के साथ खेलना, खाना-पीना, शोर मचाना घर की रौनक बने रहना घूमने जाना पिकनिक करना, घर-घर खेलना सब बहुत खूबसूरत था। उस वक्त बिलकुल भी चिंता नहीं थी ना खाने, पीने का न होश था ।अगर कुछ था तो सिर्फ खेल- कूद और मस्ती ।नाना- नानी दादी- दादी से प्यार लेना अपने नाज नखरे उठाना मैं चाचा से खिलौने चीज लेने की जिद करना यह सब बचपन की बातें थी। फिर हम बड़े हो गए सारी यादें यादगार लम्हे बनकर दिलों में बस गई और हम बड़े हो गए पता ही नहीं चला कि कब मैं नादानियां करते-करते समझदार हो गई और ऐसे ही मेरे बचपन के दिन पूरे हुए और मैं बड़ी हो गई वैसे सच कहूं तो मुझे आज भी मेरा बचपन याद आता है।

- यशरब, 10 अ

बचपन के कुछ यादगार पल बच्चों की कलम से

मेरा बचपन बड़ा सुहाना

बचपन के दिनों में मैंने काफी सारे रोमांचक क्षण जिए। मैं अपने बचपन के दिनों में खूब मस्ती की मुझे एक किस्सा याद है जब मैं अपने मोहल्ले में अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेल रहा था अक्सर हम अपने दोस्तों के साथ वहां क्रिकेट खेलते थे वहां पर एक घर था और वहां पर उनका एक पालतू कुत्ता भी उनके साथ रहता था। एक दिन खेलते हुए घर के अंदर गलती से गेंद उनके घर में गिर गई। हम सब वहां से भाग गए बाद में जब हम वहां वापस गए और हमने दीवार से झांक कर देखा तो हमने देखा कि गेंद वहीं पर गिरी हुई है। हमने एक योजना बनाई कि हम में से कोई एक बच्चा किसी के कंधे पर चढ़कर अंदर जाएगा और गेंद बाहर लेकर आएगा। बाद में इस बात पर सहमत बनी की हर्षित अंदर जाएगा पर जब हर्षित अंदर गया तो शायद उन्हें पता चल गया इसलिए वह अपने घर से बाहर निकले और उनके पालतू कुत्ता हर्षित के पीछे पड़ गया हर्षित ने ना दाएं देखा ना बाएं और फुर्ती के साथ दीवार कूद कर आया ।उस वक्त हर्षित के पसीने छूट गए लेकिन हमें तो बहुत मजा आया । यह घटना हमेशा याद रहेगी ।

- वंश बहुगुणा, 10 अ

मेरे बचपन के यादगार पल

मुझे आज भी अपने बचपन के दिन याद आते हैं ।जब मैं छोटा था कक्षा 5 में पढ़ता था मुझे खेलना कूदना बहुत पसंद था। मैं हमेशा अपने दोस्तों के साथ खेलता था। मुझे कंचे खेलना अच्छा लगता था। वह रंग बिरंगी गोलियां जो किसी भी बच्चे का मन अपनी तरफ आकर्षित कर ले। छोटी कक्षा में पढ़ाई की कोई टेंशन नहीं थी। ना ही बड़े होकर क्या बनना है यह भी नहीं सोचा था पर आज मैं अपने बचपन दोस्तों से भी नहीं मिल पाता हूं। उसका हमेशा दुख रहेगा। अब घर वालों से पढ़ाई का प्रेशर और बड़े होकर कुछ बनने का सपना और घर की जिम्मेदारियां लेना यह सब कुछ खेलने का समय ही नहीं देती । वह बचपन के दिन मुझे आज भी याद आते हैं।

- तोहिद, 10 अ

पहाड़ों में गांव है मेरा

पहाड़ों में है घर मेरा
सड़क सीधी नहीं लेकिन लोग बहुत सीधे है वहाँ।
पहाड़ों में है घर मेरा।
मकान नहीं है घर है मेरा वहां क्योंकि दादी-दादी का प्यार है वहां ।
जहां चार धामों का सुख भोलेनाथ स्वयं बसते हैं।
उन पहाड़ों में घर है मेरा ।
जहां चूल्हे की रोटी धाराओं का मीठा पानी है।
उन वादियों में गांव है मेरा ।
ऊंची इमारतें नहीं ऊंचे पहाड़ों में है घर मेरा।
हां मेरा दिल वहां बसता है पहाड़ों में। पहाड़ों में घर है मेरा।
प्रकृति का है सुंदर नजारा।
ऐसा गांव है हमारा।
पहाड़ों में स्वच्छ, हवा और स्वच्छ पानी है ।
पहाड़ों में जीवन की सरल कहानी है।

- आकांक्षा, 10 अ

बचपन के किस्से

मेरे बचपन के दिन बहुत ही सुहाने और मजेदार बीते। बचपन की कुछ यादें आज तक अपने दिल में संजो कर रखी है ।जब मैं बहुत छोटा था शायद पहली कक्षा में पढ़ता था तो सुबह अच्छे से तैयार होकर स्कूल जाने का वह दिन और जब जल्द से जल्द घर जाने की जल्दी पहुंचना मुझे आज तक याद है। अब प्रतीत होता है कि उस समय जीवन में ज्यादा पढ़ाई का जोर था ही नहीं उस समय कि
कविताओं को सीखने का उत्साह घर आकर घर वालों को कविताएं सुनाना। एक अलग ही मजा आता था कोई रिश्तेदार भी आता था तो हम पहले उनको कविताएं सुनाने लगते थे। फिर घर से बाहर खेलने कूदने लगते। दिन का खाना खाकर फिर मौज मस्ती करने निकल जाते। उस समय की दोस्ती तो मानो किसी फायदे या नुकसान से यह किसी कमी को देखकर नहीं होती थी खेल खिलौने में मगन रहना और कई प्रकार के नए खेल बनाकर खेलना उस समय मानो हमारे लिए दुनिया बहुत बड़ी और रोमांचक थी। आज जो चीज बहुत छोटी जान पड़ती है। उस समय उनका मूल्य आज से कई गुना ज्यादा था। उस समय कई चीजे पहली बार देखी थी अब समझ आता है की बचपन का वह संसार जो आज के समय से परिचित न था कितना सुंदर था।

- अतुल बागरी, 10 अ

सुलेख प्रतियोगिता

मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल में 16 अप्रैल 2025 को कक्षा 3 से लेकर कक्षा 10 तक हिंदी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सभी छात्र -छात्राओं ने बढ़कर- चढ़कर हिस्सा लिया ।हर कक्षा में प्रथम, द्वितीय , तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र -छात्राओं को प्रशस्ति पत्र प्रधानाचार्य द्वारा प्रदान किया गया।

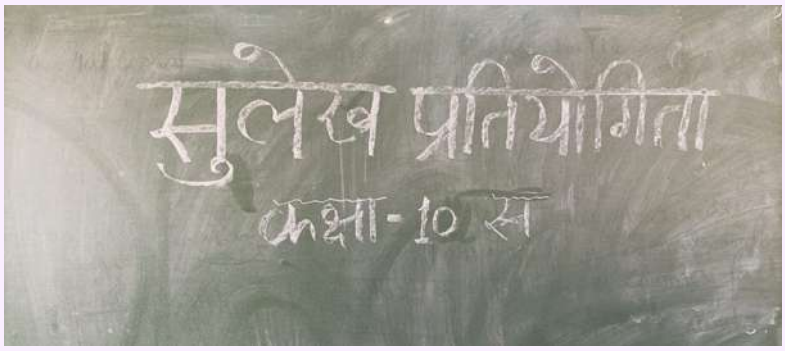

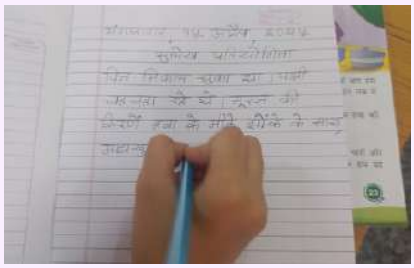

पेड़

आओ पेड़ लगाए हम ।
पर्यावरण बचाएं हम ।
पेड़ लगाना जरूरी है।
सभी को सांस लेना जरूरी है।
कहते हैं खुदा ने पेड़ लगाए सभी के लिए।
पर उन पेड़ों को काटा है हमने अपने फायदे के लिए ।
जो करता पर्यावरण से प्यार।
उसका जीवन रहता खुशहाल।
पेड़ देते मनुष्य को फल, फूल, दवा आदि।
पेड़ काट कर मनुष्य करते हैं उनकी बर्बादी।

- सुहानी, 9 स

नन्हे चित्रकार

आत्मानं विद्धि

मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल
डी- ब्लाक, नेहरू कॉलोनी, देहरादून, पिन- 248001 उत्तराखंड
ईमेल:- hr@mbs.ac.in, वेबसाइट:- www.mbs.ac.in
फोन- 0135-2669306, 8171465265
संपादक - डॉ. बबिता गुप्ता, डिजाइन - विशाल लोधा